[ISSN : 2348-2605]

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

www.gejournal.net

E-mail: hindires@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान
शोध पत्रिका
(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

हरियाणवी लोक साहित्य और समाज

प्रवक्ता–निधि सैनी

हिन्दू गर्ल्ज कालेज, जगाधरी।

आदमी ने जबसे धरती पर पांव रखा, वह तभी से बोलने लगा। अपने मन की बात कहने और दूसरे की बात समझने में भाषा/भोली आदि की जरूरत पड़ती है। ऐसा नहीं हो सकता कि प्रथम शब्द जो प्रथम व्यक्ति के मुख से निकला, किसी के द्वारा बुलवाया गया शब्द था। वह निश्चित रूप से प्राकृतिक शब्द था। हरियाणवी लोक भाषा है और उसका उदभव तभी से है, जब से हरियाणा क्षेत्र के लोंगों ने भाषा का प्रयोग करना सीखा। भाषा और संस्कृति दोनों का ही भौतिक आधार व्यक्ति हैं। इनके अभिव्यक्त होने वाले रूपों में विभिन्नता और अस्थिरता होना स्वाभाविक हैं। पर व्यक्ति समाजनिष्ट हैं। इस नाते उसकी व्यक्तिगत भाषा और संस्कृति में ऐसे मूलभूत तत्व है, जो कि समूचे सामाजिक समुदाय के प्रत्येक सदस्य की भाषा और संस्कृति में पाए जाते हैं। सैद्धान्तिक दृष्टि से असीम विविधता के बावजूद हम व्यावहारिक दृष्टि से कुछ सामान्य तत्वों के आधार पर भाषा और संस्कृति के समरूप की काल्पनिक सृष्टि कर लेते हैं, जो शास्त्रीय अध्धयन के लिए अनिवार्य हैं। हरियाणा के साहित्य में लोक साहित्य जन साहित्य एंव शिष्ट ये तीन प्रकार के साहित्य प्रचलित हैं। इनमें से मैं अपने शोध पत्र का विषय लोक साहित्य को लेते हुए प्रचलित लोक साहित्यों के विषय में चर्चा करेंगें।

भारत में लोक साहित्य की परम्परा अत्यन्त प्राचीन हैं। हरियाणा यद्यपि भारत के मानचित्र पर 1 नवम्बर, 1966 ई0 को आया परन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से इसका अस्तित्व प्राचीन काल

से रहा है तथा अंग्रेजों के शासनकाल में 19 वीं शती के उतरार्ध में तत्कालीन पंजाब प्रशासन के अंग्रेज अधिकारियों का ध्यान हरियाणा की सभ्यता और संस्कृति के वैशिष्टय की ओर अनायास ही आकृष्ट हो गया था क्योंकि उस समय में पूरे विश्व में लोक साहित्य के संकलन का कार्य पूरे जोर-शोर से चल रहा था। अम्बाला के तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर सर आर.सी.टेंपल ने दी लीजींडस आफ पंजाब के तीसरे भाग में जो 51 लोक गाथाएं प्रस्तुत की है, उनमें से 17 लोक गाथांए हरियाणा मे गाई जाती हैं। अंग्रेज अधिकारियों का लोक साहित्य पर कार्य करने का एक अन्य प्रमुख कारण यहां के लोंगों के रहन सहन, रीति रिवाज तथा परम्परा और सांस्कृतिक से सुपरिचित होना भी था, ताकि वे प्रदेश तथा लोंगों के हदय, दोनों पर राज कर सकें।

हरियाणवी लोकसाहित्य पर डा.शंकरलाल यादव द्वारा किया गया कार्य हरियाणवी लोक साहित्य का मील स्तम्भ है।

लोक साहित्य जन जीवन का दर्पण हैं। यह जनता के हदय का उदगार हैं। सर्वसाधारण जनता जो कुछ सोचती हैं। जिन भावों की अनुभूति करती है, उसी का प्रकाशन उसके साहित्य में उपलब्ध होता हैं। ग्रामीण लोग विभिन्न संस्कारों के अवसर पर तथा विभिन्न मौसमों में लोकगीत गाकर अपना मनोरंजन करते हैं। कहानियां सुनना तथा सुनाना उनके मन बहलाव का अनन्य साधन हैं। समय-समय पर चुभती हुई लोकोक्तियों तथा भाव भरे मुहावरों का प्रयोग गांवों के निवासी अपने हदयगत विचारों का प्रकाशन करते हैं। इस प्रकार लोक साहित्य पांच भागों में बंट गया।

लोक गीत, लोकगाथा, लोक कथा, लोक नाटय तथा लोक सुनभाषित परन्तु ये कहना अतिश्योक्ति न होगी यह सब संस्कृति और सभ्यता से जुड़े हैं।

जोगियों के साकों में भूरा–बादल नामक वीरगाथा एक अत्यन्त लोकप्रिय कृति हैं। जो हरियाणवी क्षेत्र में लगभग सभी जोगियों द्वारा गाई जाती हैं।

"सुनिए देवर भूरे हो, तूं शर्म हजूर।

ना म्हारे गोदी आंगली, म्हारा पीहर दूर,

बेड़ा पडया समद में खेवटिया दूर।

राणा को बंध छुड़ादे देवर तू शर्म हजूर।।"

भाउ–साका में जनकवि निगाही ने, जो स्वंय पानीपत के तीसरे युद्व का द्रष्ट था और सोनीपत के आस–पास का निवासी, वीर सदा शिवराव भाउ के पानीपत के युद्व में जूझने का, हरियाणवी भाषा में, फड़कता हुआ वर्णन किया हैं। जब लोक गायक 'निगाही' भाउ को 'मुछैल सूरमा' के नाम से सम्बोधित करते हैं, तो श्रोताओं की भुजांए फड़कने लगती हैं। लाल किले की विजय का वर्णन जोगी निगाही ने इस प्रकार किया है:–

"सुमर निगाही सुरस ही तूं पाक इलाही

चलता भाउ पेशवा नौबत बजवाई

गोले अर बारूद की पेटी भरवाई

मंजलों–मंजलों चालते ना ढील लगाई।

दिल्ली मअं आये पेशवा होंणी नै चाही।

गाजुद्दीन खां वजीर ने हिकमत बतलाई।

जामा महजत की लई सूध धर तोप चढ़ाई ।।"

इसी प्रकार लोकगाथांए भी साहित्य और संस्कृति से जुड़ी हैं।

'निहालदे' हरियाणा की लोकगाथाओं में से एक बड़ी रोचक एंव लोकप्रिय गाथा हैं। इसे उतरी भारत का महाकाव्य कहा जाए तो, कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। हरियाणा में जोगी परम्परा में इन गाथाओं के गायक हुए हैं। यो जोगी सांरगी पर, विशेष कर श्रावण मास में गांव-गांव जाकर, इस लोकगाथा से लोंगों का मनोरंजन करते हैं। राजस्थानी लोकगाथा 'ढोलामारू' हरियाणवी गाथा निहालदे का एक प्रासांगिक कथा मात्र हैं।

सुलतान केलोगढ़ में राजा मघ के महिला उद्यान में पहुंच जाता हैं। बाग की मालिन उसके इस व्यवहार पर रोंष प्रकट करती हैं। सुल्तान अपने क्षत्रियत्व की दुहाई देता हैः-

"बाग जानना बेटटी झूले राजा मघमान की धंवर निहाल।

बेरा पट जा राजा मघमान नै तनै देगा सूली पर टांग।

हट कै बोला पोता बैन का सुण री मालन मेरा एक जुआब।

मैं छतरी जन्म का चालूं छतरापन की चाल।।"

गुग्गा नौमी हरियाणा में श्रद्वा और विश्वास से प्रतिवर्ष भाद्रपद की कृष्ण पक्षीय नवमी को मनाई जाती हैं। यह लोक विश्वास और आस्था का त्यौहार है, जोकि गुग्गा की स्मृति में मनाया जाता है। गुग्गा नामक एक वीर पुरूष हुआ हैं। जिसकी लोकगाथा की हरियाणा के गांव-गांव में सभैयों द्वारा गाई जाती है। गुग्गा गुरू गोरख का शिष्य था, जिसने बाद में सिद्वी प्राप्त की और नौमी के दिन भूमि-समाधि ले लेने के कारण संसार में अमरता को प्राप्त किया। यद्यपि गुग्गा राग वीरगाथा है तथापि इसमें यंत्र-तंत्र हरियाणवी जनमानस आस्था एंव विश्वास के दर्शन भी होते हैं। गुग्गा का दिल्ली के बादशाह से युद्व होने से पूर्व ही, गुग्गा की पत्नी सीरियल को अपशकुन दिखाई देने लगते हैं।

"बोलै सरियल के कहै सुण सासु मेरी बात,

सुख सोई रंग महल में मन्जै आये आल-जंजाल,

बिन्दी टूटी भौं पड़ी मेरी बलखागी थी नाथ,

सौंपनें में हलचल होई तेरा डिग्या कंवर का राज।।"

लोक-साहित्य की जन विधाओं को डा0 शंकर लाल यादव तथा डा0 लालचन्द गुप्ता मंगल ने प्रकीर्ण साहित्य के अर्न्तगत रखा हैं, डा0 कृष्णदेव उपाध्याय ने उनके लिए लोकसुभाषित शब्द सुझाया। आम ग्रामीण लोग अपने दैनिक व्यवहार में कहावतों और मुहावरों का प्रयोग करते हैं। 'लोकोक्ति' लोक साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। वस्तुतः लोक साधना का प्रत्येक शब्द, प्रत्येक स्वर, युग-युगांतरों के सांस्कृतिक एंव सामाजिक भाव बोध को सबसे अधिक लोकोक्तियों के सूत्र में बांधे हुए हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हरियाणवी साहित्य सम्पूर्ण रूप से हरियाणा की संस्कृति, रिति-रिवाज, परम्पराओं, सभ्यता से जुड़ा हैं।